

COURSE A

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सेकण्डरी स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : Hindi (A)
विषय कोड Subject Code : 002
परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Friday 10-March-17
उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखें
कोड को दर्शाए :
Write code No. as written on
the top of the question paper :
Code Number 3/3
Set Number ① ② ● ④

अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer-book(s) used

विकलांग व्यक्ति : हाँ / नहीं
Person with Disabilities : Yes / No No

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएँ।
If physically challenged, tick the category

B D H S C A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन — लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No No

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये
सॉफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used :

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।

Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

8350695
002/00054

खण्ड - क

कर्तव्यपालन

1. (क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

वहों के निवासियों पर

वाहन - चालकों को सुधाश है

गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका की ज़रूरत जिम्मेदारी के प्रति सचेत करना

2. (क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

राखीगढ़ी

शहर नियोजित था

नष्ट हो जाने का खतरा है

काफ़ी प्राचीन और बड़ी सभ्यता हो सकती है

राखीगढ़ी : एक सभ्यता की संभावना

3. (क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

निशशा और जड़ता छोड़ो

दुखी लोग और ईश्वर

उच्च आदर्श और आशा के महत्व को बनाए रखें

इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहे

भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहे

4. (क) मुख्य हैं।

(ख) प्रगति के पथ पर एक कदम भी नहीं बढ़ा

(ग) सबसे बलशाली हैं।

(घ) हम हवाओं के बल पर झूमते हैं।

(ङ) सबने अपने अहंकार में उसे धुला दिया।

खण्ड - ख

5. (क)

दूसरे फलों के साथ डालिया में आम रखे हैं। डालिया में दूसरे फलों के साथ आम रखे हैं।

(ख)

पीलक शर्माला है इसलिए चेड़ के पत्तों में छुपकर वीरता है।

(ग)

मित्र वाक्य

6. (क)

कुछ छोटे भूरे पक्षियों द्वारा मंच संभाल लिया जाता है।

(ख)

धुलबुल शत्रि-विनाश अमरुद्ध की डाल पर करती है।

(ग)

तुमसे दिनभर कैसे बैठा जाएगा ?

(घ)

सात सुरों को उसके द्वारा गज़ब की विविधता के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

7.

(A)

मानव को

भेद - संज्ञा ✓

उपभेद - जातिवाचक, संज्ञा

लिंग - पुल्लिंग

वचन - एकवचन ✓

कारक - संप्रदान कारक

कठिन

भेद - विशेषण

उपभेद - गुणवाचक ✓

लिंग - पुल्लिंग

वचन - एकवचन

विशेष्य - 'कार्य'

कार्य

भेद - संज्ञा

उपभेद - जातिवाचक ✓

लिंग - पुल्लिंग

वचन - एकवचन

लेकिन

भेद - समुच्चयबोधक

उपभेद - समानार्थिकरण

पदों को जोड़ रहा है - 'मानव को इंसान बनाना अत्यंत ही कठिन कार्य है' और 'लेकिन असंभव नहीं।' को जोड़ रहा है।

(क) शैत्र रस

(ii) करुण रस

(ख) (i) संतर्प प्रेम स्थायी भाव है।

(ii) हास्य रस का स्थायी भाव है हास

खण्ड-ग

9. (क) पुरुषों में नियमबद्ध शिक्षा प्रणाली न मिलने पर लेखक आश्चर्य नहीं मानता क्योंकि पुरुषों जमाने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय नहीं था तो नियमबद्ध प्रणाली कहाँ से मिलती। यदि कोई कोई उल्लेख रहा भी हो लेकिन नष्ट हो गया हो तो उसका पुराणादि में न मिलना आश्चर्यजनक नहीं है।

(ख)

लेखक ने यह बताया है कि पुराणादि में जहाज बनाने के कोई ग्रंथ न होने के बाद भी हम उनका अस्तित्व बड़े गर्व से स्वीकार कर लेते हैं उसी प्रकार हमें यदि पुराणों में स्त्री शिक्षा की नियमबद्ध प्रणाली न मिले तो इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि पुराने जमाने की सभी स्त्रियाँ अनपढ़ थीं या उन्हें पढ़ाने की परंपरा न थी क्योंकि पुराने ग्रंथों में अनेक विद्वान् पंडितों का उल्लेख मिलता है।

(ग)

शिक्षा की नियमावली का न मिलना, स्त्रियों के अपढ़ होने का सबूत नहीं है क्योंकि पुराने ग्रंथों में अनेक प्रगल्भ पंडितों का नामोल्लेख मिलता है।

10. (क)

मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के बारे में बताते हुए कहा है कि उनकी माँ में धरती से कुछ अधिक ही सहनशीलता व बौद्धिकता थी। उन्होंने जीवन में अपने लिए कुछ नहीं चाहा केवल दिया ही दिया है। वह हमेशा पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित इच्छा को अपना फर्ज समझकर निभाती थीं। लेखिका कहती है उनका और उनके भाई-बहनों का सारा लगाव माँ के प्रति था। साथ ही लेखिका ने यह भी कहा है कि उनकी माँ का निःशर्त मजबूरी में लिपटा त्याग कभी उनका आदर्श नहीं बन सका।

(ख)

लैखिका ने अपने पिता के शक्की स्वभाव का कारण अपनों के हाथों विश्वासघात देने का दिया है। वह विचार करती है कि कितनी गहरी चोटें होंगी वे अपनों के द्वारा विश्वासघात की जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता जी को इतना शक्की बना दिया।

लैखिका ने यह भी बताया कि गिरती आर्थिक व्यवस्था के कारण भी पिताजी का स्वभाव बात के दिनों में शक्की हो गया था कि जब-तब परिवार के बाकी लोग भी इसकी चपेट में आते रहते थे।

(ग)

बिश्मिल्ला खाँ अस्सी वर्ष से खुदा से सच्चे सुर की माँग कर रहे थे। उन्हें विश्वास था कि एक दिन खुदा उन पर यह ही मेहरबान होगा और उनकी अपनी सीली से सुर का फल उगल कर उनकी ओर फैकेगा और कहेगा 'जा अमीरुद्दीन। ले जा इसे और कर ले अपनी मुशद पूरी। अर्थात् एक दिन सब सुर को बरतने की तमीज़ उन्हें अवश्य आएगी।

(घ)

काशी से मलाई वर्क, कचोड़ी, अदब और आदर की संस्कृति के जाने के बाद भी अभी कुछ शेष है जो केवल काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती है और इसी की धारों पर खोती है। काशी में बिश्मिल्ला खाँ के रूप में संगीत और सुर की तमीज़ सिखाने वाला हीरा रहा है,

(ड.)

कौसल्यायन जी के अनुसार संस्कृति ही सभ्यता की जननी है। हमारे खान-पान के तरीके, हमारे रहन-सहन के तरीके, हमारे गमन-गमन के साधन, परस्पर कह-महने के तरीके, ये सब हमारी सभ्यता हैं।

11. (क)

इस पंक्ति आशय है कि जब मुख्य गायक तारसप्तक में गाता है और उसमें गाते हुए उसकी आवाज़ में प्रवाह कम होने लगता है और वह अपने सुर से भटक जाता है और उसका सुर बुझा-बुझा सा प्रतीत होने लगता है।

(ख)

मुख्य गायक की टाट्स बँधाता है संगतकार। जब तारसप्तक में गाते हुए मुख्य गायक का गला बेठने लगता है, उसका उसका उत्साह कम होने लगता है तब संगतकार उसके स्वर में अपना स्वर मिलाकर उसे टाट्स बँधाता है।

(ग)

ऊँचे स्वर में गाने के तारसप्तक कहलाता है।

12. (क)

कन्यादान कविता में माँ ने बेटी को अपने चेटे पर खींचने की सलाह इसाविए की है क्योंकि प्रशंसा के वे शब्द उसे आदर्श रूपी बँधन में बाँध देंगे और समाज के सामने उसकी यही कोमलता उसकी कमजोरी बन जाएगी।

(ख)

माँ को बेटी को दान में देने का दुख प्रामाणिक था। उसकी बेटी इसे आंतिम पूँजी के समान लग रही थी क्योंकि उसने उसे इतने प्रेम से पाला था और जीवन भर उसे संभाल कर रखा था। अब वह उसे किसी और को दे रही है। अब इसकी बेटी उसके लिए पराई हो जाएगी। इसी कारण माँ का दुख इतना प्रामाणिक था।

(ग)

कवि इस पांक्ति में कहते हैं कि जो तुम्हें नहीं मिला उसे सोचकर मत दुखी हो और उसे भूलकर आविष्य के बारे में सोचो, उसे सुंदर बनाने के बारे में सोचो। कवि अपनी बुद्धि का प्रयोग कर बीती बातों को भूलने को कहते हैं क्योंकि बीती थोड़े थोड़े करके केवल दुख की प्रति छेद होगी और आने वाले आविष्य को सुखी बनाने का प्रयास करने को कहते हैं ताकि आविष्य में सुख से रह सकें। इस प्रकार इस कथन में कवि की वेदना और चेतना व्यक्त हो रही है।

(ह.)

राम ने यह पाँकी तब कही थी जब परशुराम क्रोधित होकर सभा में आए और दूधने लगे कि शिव जी का धनुष किसने तोड़ा। श्री राम का उत्तर उनके विनम्र स्वभाव को दर्शाता है। वह स्थिर बुद्धि के थे। इनमें सद्गुण और सत्कर्म के गुण विद्यमान थे। इनके वचनों में जल के समान शीतलता थी।

(ड.)

परशुराम स्वभाव से क्रोधी, धैर्य और अपनी साहस व बल पर अभिमान करते थे।

जब उन्हें शिव जी के धनुष के टूटने का पता चलता है तो वे क्रोधित होकर सभा में आते हैं और धनुष तोड़ने वाले को समाज से अलग होने का आह्वान देते हैं। अन्यथा शारे राजाओं को मारने की बात करते हैं।

परशुराम अपने साहस और बल का बखान करते हुए कहते हैं कि उन्होंने अपनी भुजाओं के बल से अनेक बार पृथ्वी को राजाओं से शक्ति करके ब्राह्मणों को दास में पिया है और उनका फरसा तो आवाज से गर्भों के बच्चों का नाश करने वाला है।

18.

यह कथन पाठ 'साना - साना हाथ जोड़ें' में एक फौजी ने कहा था जब लेखिका ने उनसे पूछा था कि इतनी ठंड में वे वहाँ कैसे रहते थे।

इस कथन से हमें बता चलता है कि फौजी अपने देश और देशवासियों के भाविष्य के लिए निस्वार्थ भाव से अपने आज की तुफान देते हैं। फौजी जवान ऐसे शूद्रा^{व. पश्चिमिये} जो दिन - रात पहरा देते हैं जो आम - जनता के लिए अत्यंत विषम हैं। ऊँचे - ऊँचे बर्फाले पहाड़ी पर जहाँ पेट्रोल के सिवाय सब कुछ जम जाता है, यह जवान वहाँ तैनात रहते हैं। शीतलान के गर्मी के दिनों में तपा देने वाली धूप में भी यह तैनात रहते हैं और हाँफ - हाँफकर अनेक विषमताओं का सामना करते हैं। इन्हें लगातार दुश्मनों का सामना करना पड़ता है। ये अपना कार्य अपने परिवारों से दूर रहकर करते हैं। ये जवान हमारे देश का गौरव और प्रतिष्ठा अक्षुण्ण करने वाले महारथी हैं। अतः हमारा यह फर्ज बनता है कि हम इन्हें मान दें, सम्मान दें। इन्हें इनके परिवारों के प्रति आत्मीय संबंध बनाए रखें। फौजी जवान सीमाओं पर तैनात हैं - इस तथ्य को जानते हुए देश के लोग चैन की नींद सो पाते हैं। इसलिए हम इतना तो कर ही सकते हैं कि जवानों के गर्म कपड़े, भोजन, दवाईयाँ, धीजवाएँ, इन्हें सम्मानित करें।

खण्ड - द्वा

आतंकवाद

14. (ख)



बढ़ता आतंकवाद :- आतंकवाद आज का सबसे बहुप्रचलित शब्द है। यह शब्द सुनते ही हमारे दिमाग में बम विस्फोट, पिस्तौल धारी लोगो की दारियाँ मस्तिष्क में कौंधती हैं। समाज में आतंकवाद आज इतना बढ़ गया है कि इस बात का भी भरोसा नहीं रह गया है घर से निकलने के बाद हम घर पहुँच भी पाएँगे या नहीं। आतंकवाद केवल बम विस्फोट करना ही नहीं बल्कि जाति, धर्म आदि के नाम पर होने वाले झगड़े भी आतंकवाद के अंतर्गत आते हैं। - मनुष्यता के खिलाफ आतंकवाद।

भारत में आतंकवाद :- आज भारत में भी आतंकवाद की बढ़ोतरी हुई है। आस पिन समाचार पत्रों और दूरदर्शन पर किसी न किसी आतंकवादी के पकड़े जाने की खबरें आती रहती हैं और सीमाओं पर घुसपैठ की। सीमाओं पर घुसपैठ सेकने में हमारे देश के फौजीयो का योगदान रहता परंतु अनेको सैनिक मारे भी जाते हैं जिससे हमारा मन अक्रांत रहता है। बंबई के ताज होटल में बम विस्फोट, दिल्ली में संसद सदन पर

आतंकवादी हमला हमें याद दिलाते हैं कि आतंकवाद हमारे देश को कितनी चोट पहुँचाई है। हमने कितने अपनों को खोया है आतंकवाद की आग में। हमारे प्रधानमंत्री ने आतंकवाद के खिलाफ जो मुहिम छेड़ी है, आशा है उसके सकाशत्मक परिणाम सामने आएँगे परंतु तब तक हमें एक साथ मिलकर, एक दूसरे की सहायता करके रहना होगा।

विश्व-स्तर पर आतंकवाद :- केवल भारत में ही नहीं विश्व स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ आवाज़ दृढ़ हुई है। फ्रांस, अमेरिका, इराक, सीरिया हर देश में आतंकवादी गतिविधियों ने जोर पकड़ रखा है। सभी देशों ने आतंकवाद के खिलाफ एक दैले का आह्वान दिया है।

आतंकवादियों के लिए कोई किसी देश का नहीं है उनका कार्य तो केवल आतंक फैलाना मनुष्यता का विनाश करना है। पाकिस्तान के स्कूली बच्चों को मारकर आतंकवादियों ने यह सिद्ध कर दिया कि वे किसी धर्म के नहीं। आतंकवाद से लड़ने का केवल एक उपाय और वह है विश्व के देशों में आपसी सौहार्द। जब तक सब लोग एक साथ हैं हमारी शक्ति उतनी ही अधिक है और आतंकवाद को इस अविभाज्य मानव संस्कृति को विभाजित करने के सभी उपाय बेकार हो जाएँगे।

15.

परीक्षा भवन
अ.ब. स नगर

दिनांक : 10 मार्च 20xx

पूजनीय माता जी
सादर चरण स्पर्श

आपका पत्र मिला। पत्रोत्तर में बिलंब के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। पिछले एक माह से हम विद्यालय में होने वाले संगीत समारोह की तैयारियों में व्यस्त थे इसलिए आपके पत्र का उत्तर नहीं दे पाई।

~~संगीत समारोह~~ गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे विद्यालय में संगीत समारोह आयोजित किया गया और पूरे विद्यालय को दुल्हन की तरह सजाया गया। विशेष आतिथियों में प्राध्यापक शहनाईवादक एवं अनेक गणमान्य आतिथि उपस्थित थे।

समारोह का आरंभ सरस्वती वंदना से हुआ। इसके बाद अनेक प्रकार के कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई थी। हमारे संगीत के शिक्षक के साथ कुछ विद्यार्थियों ने बहुत बेहतरीन गायन व वादन पेश कर पूरे माहौल को संगीतमय बना दिया। सभी कार्यक्रमों का आधार

था हमारे देश के प्रसिद्ध रहस्यवादी उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को अर्पणाजलि देना। तत्पश्चात् प्रधानाचार्य ने सभी विद्यार्थियों के कार्य और मेहनत को सराहा और उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को अर्पणाजलि देने के बाद इस संगीतमय रात्रि का समापन हो गया। पिता जी की मेरा प्रणाम और रोदन को प्यार।

आपकी पुत्री
क. ख. ग

६

16

शीर्षक — मनुष्य और पशुत्व

सार — नाखूनों का बढ़ना मनुष्य में ^{उसी प्रकार} पशुत्व का द्योतक ^{है} ~~है~~ जिस प्रकार अस्त्र-शस्त्रों का बढ़ना है जीवन में। ~~पशुत्व~~ मनुष्य की धृणा पशुत्व की जन्म देती है जबकि ~~अ~~ दूसरों का अपर कर्तना व अपने ^{को} शंयत रखना मनुष्यता को। जिस दिन मनुष्य द्वारा मांशास्त्रों का प्रयोग बंद हो जाएगा उस दिन इसका पशुत्व का भी अंत हो जाएगा।

७

८